(1) रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी – हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है— तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था? [801 (HF) 2024]

अथवा **ममता विधवा.....अन्त था?**

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'ममता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक 'जयशंकर प्रसाद जी'**हैं**|

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या – जिस प्रकार सोन नदी उफनकर बह रही है, उसी प्रकार ममता का यौवन भी पूरी तरह उफान पर है। वह रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री है। वह हर प्रकार के भौतिक सुख से सम्पन्न है, फिर भी हिन्दू-विधवा-जीवन के कठोर अभिशाप से उसका मन तरह-तरह के विचारों और भावों की आंधी से भरा हुआ है। उसकी आँखों से दुःख के आँसू बह रहे हैं। काँटों की शय्या पर सोनेवाला व्यक्ति जिस प्रकार हर पल बेचैन रहता है, उसी प्रकार सभी प्रकार के भौतिक सुखों के रहते हुए भी ममता का जीवन कष्टदायक सिद्ध हो रहा है।

G.S. Sindhu Coaching Classes

प्रश्न- (iii)रोहतास-दुर्ग कहाँ स्थित है?

उत्तर- रोहतास-दुर्ग सोन नदी के तट पर स्थित है।

प्रश्न- (iv)ममता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर- ममता रोहतास-दुर्ग के दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री थी। वह युवा और विधवा थी। उसके मन-मस्तिष्क में विरह-वेदना के कारण उथल-पुथल मची थी, जिस कारण उसकी आँखों में दुःख के आँसू थे।

प्रश्न- (v)उपर्युक्त गद्यांश में हिन्दू विधवा की स्थिति कैसी है?

उत्तर- समाज में हिन्दू-विधवा की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती है। उसे समाज का सबसे तुच्छ (दीन-हीन) और बेसहारा प्राणी माना जाता है।

प्रश्न- (vi)ममता कौन थी? वह क्या देख रही थी?

उत्तर- ममता रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की विधवा पुत्री थी। वह अपने यौवन के समान उमड़ते शोण नदी के तीक्ष्ण प्रवाह को देख रही थी।

प्रश्न- (vii) **गद्यांश के आधार पर सबसे तुच्छ और निराश्रय प्राणी कौन है?**

उत्तर- हिन्दू विधवा अथवा ममता सबसे तुच्छ और निराश्रय प्राणी है।

(2) "हे भगवान् ! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके? यह असम्भव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ- इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।"

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'में संकलित पाठ 'ममता'से उद्धृत है। इसके लेखक जयशंकरप्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या** – ममता कहती है, हे भगवान् ! मेरे इस पिता को धिक्कार है, जिसने मुसीबत के समय के लिए अपना ईमान-धर्म बेचकर घूस के रूप में यह विपुल स्वर्णराशि प्राप्त की है। इस विपत्ति को देनेवाला परम शक्तिशाली परमपिता परमात्मा ही तो है, जो सारे संसार का संचालन करता है। जब उसने विपत्ति दी है तो उसे किसी भी स्थिति में टाला नहीं जा सकता, यदि हम उसके विरुद्ध कुछ करते हैं तो यह हमारा उसके प्रति दुस्साहस ही तो है। वह अपने पिता से कहती है कि पिताजी! आपने यह अच्छा कार्य नहीं किया। यदि भविष्य में विपत्ति आती भी तो हम भीख माँगकर अपना पेट पाल सकते थे, इस घूस लेने से तो वह भीख माँगना कहीं श्रेष्ठ होता। क्या आपको इस संसार पर यह भी भरोसा नहीं रहा कि कल को भिखारी को भीख भी न मिलेगी।

Gyansindhu Coaching Classes

प्रश्न- (iii) 'विपद के लिए! इतना आयोजन!' यहाँ 'इतना आयोजन' के द्वारा किस आयोजन की बात की गई है?

उत्तर- ममता के पिता चूड़ामणि ने उसके भविष्य की चिन्ता करते हुए उसे दस थाल भरकर सोना उपहार में दिया। चूड़ामणि को यह सोना उत्कोच के रूप में प्राप्त हुआ था। चूड़ामणि के इसी उत्कोच की बात 'इतना आयोजन'के द्वारा की गई है।

प्रश्न- (iv) चूड़ामणि ने ऐसा क्या किया, जो ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा?
अथवा **अपने पिता का कौन-सा कृत्य ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा?**

उत्तर- चूड़ामणि ने ममता के लिए उत्कोच के रूप में स्वीकार किया गया दस थाल सोना भरकर उपहार में प्रदान किया। उनका यही कार्य ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा।

प्रश्न-(v) इस गद्यांश से ममता की किस मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है?

उत्तर- इस गद्यांश से ममता की भाग्यवादी **अथवा** ईश्वरवादी मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।

प्रश्न-(vi) उपर्युक्त गद्यांश में किस कार्य को ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध बताया गया है?

उत्तर- उपर्युक्त गद्यांश में उत्कोच द्वारा धन-संचय के कार्य को ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध बताया गया है।

(3) अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा- "मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था, या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर

बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोपड़ी खोदवाने के डर से भयभीत रही। भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर- विश्राम गृह में जाती हूँ।' [801 (DB) 2023]

अथवा **"मैं नहीं जानती.....में जाती हूँ।"**

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'ममता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या-मरणासन्न ममता अश्वारोही को बताती है कि उस व्यक्ति के जाते समय मैंने सुना था कि वह अपने किसी आदमी को मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे रहा था। उस दिन से आज तक मुझे यही भय सताता रहा कि पता नहीं कब कोई आकर मेरी इस झोपड़ी को गिराकर और इस स्थान को खुदवाकर मकान बनवा दे। मैं नहीं चाहती थी कि कोई इसे गिराकर इसके स्थान पर मकान बनवा दे, यही मेरे भयभीत होने का कारण था। शायद भगवान् ने मेरी प्रार्थना सुन ली थी, इसीलिए आज तक यहाँ कोई मकान बनवाने नहीं आया। अब मेरा समय पूरा हो गया है। मैं इसे छोडे परमधाम को जा रही हूँ।

Gyandhu Coaching Classes

प्रश्न- (iii)अश्वारोही ममता की झोपड़ी ढूँढता हुआ क्यों आया?

उत्तर- अश्वारोही ममता की झोपड़ी को ढूँढता हुआ इसलिए आया था; क्योंकि उसे उसकी झोपड़ी के स्थान पर मकान बनवाने का आदेश मिला था।

प्रश्न- (iv) वह आजीवन क्यों भयभीत रही?

अथवा **आजीवन भयभीत रहने का कारण लिखिए।**

उत्तर- ममता आजीवन अपनी झोपडी खोदे जाने के डर से भयभीत रही, क्योंकि उसमें एक दिन के लिए विश्राम करनेवाले किसी मुगल ने उसके स्थान पर घर बनवाने का आदेश दिया था।

प्रश्न- (v)भगवान् ने ममता की कौन-सी बात सुन ली?

उत्तर- भगवान् ने ममता की झोपड़ी न गिराए जाने की बात सुन ली।

प्रश्न- (vi) 'चिर-विश्राम गृह' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- चिर- विश्राम गृह'का आशय स्वर्गलोक से है।

(4) **काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खण्डहर था। भग्न चूड़ा, तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी। जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश**

ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी "अनन्याश्चिन्तयन्तों मां ये जनाः पर्युपासते।"

[801 (DD) 2023]

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड' के 'ममता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या** – जयशंकर प्रसाद जी कहते हैं कि काशी के उत्तर में अनेक बौद्ध स्मारक हैं। इन स्मारकों को मौर्य वंश एवं गुप्त वंश की शान बढ़ाने के लिए बनवाया गया था। ये स्मारक अब टूट-फूट चुके हैं। इनकी टूटी-फूटी चोटियाँ, दीवारें, कंगूरे खण्डहर बन गए हैं। इन पर झाड़ियाँ उग आई हैं, पत्ते बिखरे हैं। इन खण्डहरों को देखकर ऐसा लगता है मानो ईंट के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्पकला की आत्मा ग्रीष्म ऋतु की चाँदनी से स्वयं को शीतलता प्रदान कर रही थी।

प्रश्न- (iii) धर्मचक्र कहाँ स्थित था ?

उत्तर- काशी के उत्तर में।

Gyan Sindhu Coaching Classes

प्रश्न- (iv) पंचवर्गीय भिक्षु कौन थे? ये गौतम से क्यों और कहाँ मिले थे?

उत्तर- पंचवर्गीय भिक्षु गौतम बुद्ध के प्रथम पाँच शिष्य थे, ये पाँचों शिष्य गौतम बुद्ध से उपदेश ग्रहण करने के लिए काशी के उत्तर में स्थित उन खण्डहरों में मिले थे, जो सारनाथ नामक स्थान पर स्थित है।

प्रश्न –(vi) "अनन्याश्चिन्तयन्तों मां ये जनाः पर्युपासते।" का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भगवान श्री कृष्ण कहते हैं, कि जो भक्त अनन्य भाव से मेरा चिन्तन करते हुए जो मेरी ही उपासना करते हैं, (उन नित्ययुक्त पुरुषों का योगक्षेम मैं वहन करता हूँ।)

(5) **"मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म-अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए, परन्तु यहाँ नहीं-नहीं सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं कर्तव्य करना है। तब ?" मुग़ल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा "क्या आश्चर्य है कि तुम भी -छल करो, ठहरो।""छल! नहीं तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ। भाग्य का खेल है।" [801 (DF) 2023]**

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- पाठ का नाम- 'ममता' तथा लेखक 'जयशंकर प्रसाद' जी हैं।

प्रश्न- (ii) "छल ! नहीं तब नहीं स्त्री ! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा ? जाता हूँ।" वाक्य किसने कहा और क्यों कहा?

उत्तर- "छल! नहीं, तब नहीं स्त्री! जाता हूँ।" यह कथन हुमायूँ द्वारा ममता से कहा गया, हुमायूँ ने कहा तैमूरवंशी कुछ भी कर सकते हैं, परन्तु किसी स्त्री के साथ छल कभी नहीं कर सकते।

प्रश्न- (iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या** – प्रसाद जी कहते हैं कि जब हुमायूँ ममता की झोंपड़ी में शरण लेता है, तब ममता के मन में अन्तर्द्वन्द्व चलता है कि वह हुमायूँ की मदद करे अथवा नहीं। ममता मन-ही-मन विचार करती है कि मैं तो ब्राह्मणी हूँ और सच्चा ब्राह्मण कभी अपने धर्म से विमुख नहीं होता, इसलिए मुझे तो अपने अतिथि-धर्म का पालन करना ही चाहिए और उसकी सेवा करनी चाहिए, परन्तु दूसरी ओर उसके मन में विचार आया कि यह तो अत्याचारी, पापी है।

इन मुगलवंशियों ने तो मेरे पिताजी की हत्या की थी। यदि कोई और पापी होता तो उसके प्रति दया दिखाकर उसे सहारा दिया जा सकता था, परन्तु पिता की हत्या करने वाले को कभी नहीं। एक बार पुनः उसके मन में विचलन होना आरम्भ हो जाता है और वह कहती है-मैं इसके ऊपर दया-भाव तो नहीं दिखा रही हूँ, परन्तु अपना कर्त्तव्य निर्वाह कर रही हूँ।

Gyan Bindhu Coaching Classes

प्रश्न- (iv) ममता के मन में क्या अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था?

उत्तर- ममता के मन में अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था कि हुमायूँ की मदद करे अथवा नहीं।

प्रश्न- (v) ममता मन-ही-मन क्या विचारती है?

उत्तर- ममता मन-ही-मन यह विचारती है कि मैं तो ब्राह्मणी हूँ और सच्चा ब्राह्मण कभी अपने धर्म से विमुख नहीं होता।

प्रश्न- (vi) 'क्या आश्चर्य है कि तुम छल करो।' यह कथन किसने, किससे कहा और क्यों?

उत्तर- "क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो।" यह कथन ममता ने हुमायूँ से कहा, क्योंकि ममता के पिता की हत्या भी मुगलों ने छल से ही की थी।